आपका ब्रांड यहाँ
आपका नाम, लोगो, रंग और संपर्क विवरण यहाँ छपते हैं



शास्त्रीय कुण्डली रिपोर्ट बंडल

नमूना रिपोर्ट

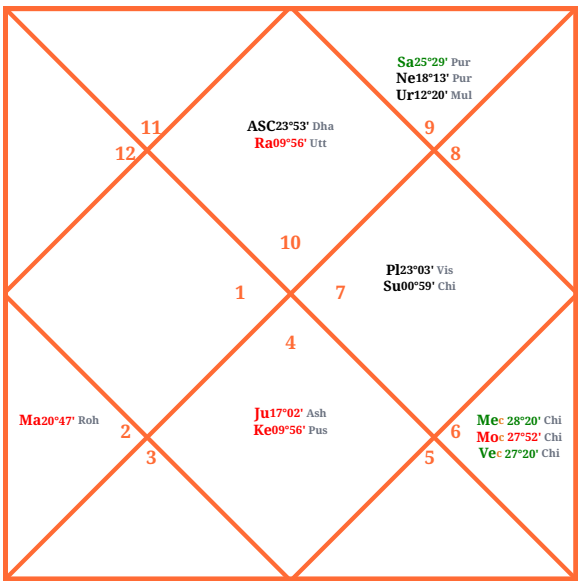
दिनांक और समय	1990-10-18T14:30:00
समय क्षेत्र	Asia/Kolkata
अक्षांश	28.6139
देशांतर	77.209
बंडल	दशा
तैयार	2026-11-08
भाषा	hi

प्रकृति
शास्त्रीय पाठ-आधारित फलादेश: योग, ग्रह फल, रत्न और रुद्राक्ष संबंधी पाठ इस कुण्डली के लिए शास्त्रीय परंपरा से उद्धृत हैं। इनमें आयु, रोग या उपचार संबंधी कथन चिकित्सीय सलाह नहीं हैं और न ही आयु या स्वास्थ्य की भविष्यवाणी हैं।

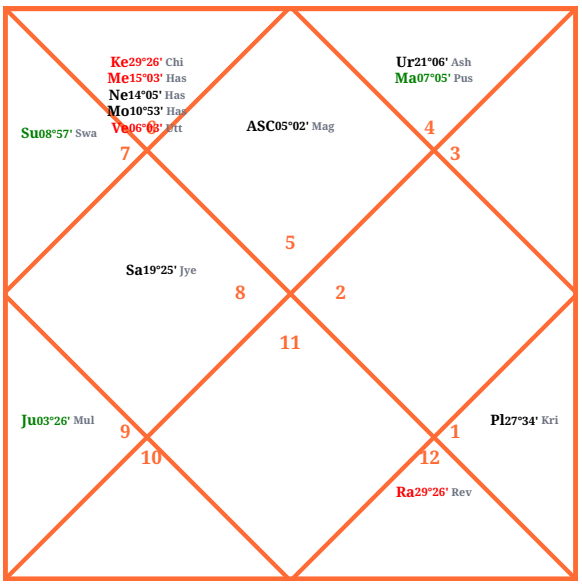
विषय-सूची

कुण्डलियाँ 3
जन्म विवरण 3
ग्रह 5
मैत्री 6
विंशोत्तरी दशा 7
दशा फलादेश 11
लग्न वाचन 12
दशा फल 13
योग 41

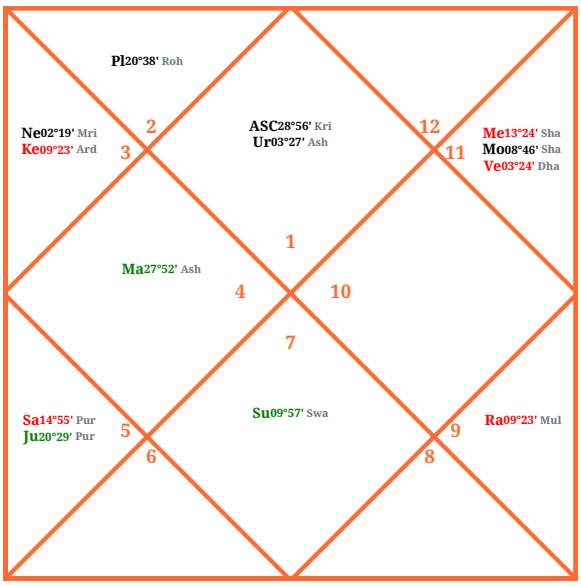
कुण्डलियाँ



जन्म कुंडली (D1)



नवांश (D9)



दशमांश (D10)

बंडल	दशा

जन्म विवरण

अयनांश · ID	Lahiri
अयनांश · नाम	N.C. Lahiri
अयनांश · अंश	23.7285

लग्न

राशि	मकर
राशिश	शनि
नक्षत्र	धनिष्ठा
पद	1

चंद्र

राशि	कन्या
राशिश	बुध
नक्षत्र	चित्रा
नक्षत्र स्वामी	मंगल
पद	2

सूर्य राशि · निरयण	तुला
सूर्य राशि · सायन	तुला

अवकहड़ा

वर्ण	वैश्य
वश्य	Manava
योनि	बाघ
गण	राक्षस
नाड़ी	मध्य
राशि स्वामी	बुध
पाया	Silver
तत्त्व	Prithvi
तत्व	पृथ्वी
युंज	अन्त्य
वर्ग	Mouse
हंसक	Prithvi
नाम अक्षर	Po

जन्म के समय पंचांग · तिथि	अमावस्या
जन्म के समय पंचांग · योग	वैधृति
जन्म के समय पंचांग · करण	Naga

सूर्योदय के समय पंचांग

तिथि	अमावस्या
पक्ष	Krishna
नक्षत्र	चित्रा
योग	वैधृति
करण	Chatushpada

अंग समाप्ति समय

तिथि	21:06

नक्षत्र	07:40
योग	16:31
करण	21:06

सूर्योदय	06:23:52
सूर्यास्त	17:49:12

ग्रह

अयनांश · ID	Lahiri
अयनांश · नाम	N.C. Lahiri
अयनांश · अंश	23.7285
नोड	True
भाव प्रणाली	Whole sign

लग्न

राशि	मकर
राशि संख्या	10
राशिश	शनि
अंश	23.8935
अंश DMS	23-53-37
देशांतर	293.8935
नक्षत्र	धनिष्ठा
नक्षत्र संख्या	23
नक्षत्र स्वामी	मंगल
पद	1

ग्रह

नाम	राशि	राशि संख्या	राशिश	अंश	अंश DMS	देशांतर	नक्षत्र
सूर्य	तुला	7	शुक्र	0.9951	00-59-42	180.9951	चित्रा
चंद्र	कन्या	6	बुध	27.8766	27-52-36	177.8766	चित्रा
मंगल	वृषभ	2	शुक्र	20.7877	20-47-16	50.7877	रोहिणी
बुध	कन्या	6	बुध	28.34	28-20-24	178.34	चित्रा
गुरु	कर्क	4	चंद्र	17.0493	17-02-58	107.0493	आश्लेषा
शुक्र	कन्या	6	बुध	27.3406	27-20-26	177.3406	चित्रा
शनि	धनु	9	गुरु	25.4923	25-29-32	265.4923	पूर्वाषाढ़ा
राहु	मकर	10	शनि	9.9384	09-56-18	279.9384	उत्तराषाढ़ा
केतु	कर्क	4	चंद्र	9.9384	09-56-18	99.9384	पुष्य
अरुण	धनु	9	गुरु	12.3459	12-20-45	252.3459	मूल
वरुण	धनु	9	गुरु	18.2324	18-13-57	258.2324	पूर्वाषाढ़ा
यम	तुला	7	शुक्र	23.0635	23-03-49	203.0635	विशाखा

नाम	नक्षत्र संख्या	नक्षत्र स्वामी	पद	भाव	गति	वक्री	अस्त
सूर्य	14	मंगल	3	10	0.993145	नहीं	नहीं

नाम	नक्षत्र संख्या	नक्षत्र स्वामी	पद	भाव	गति	वक्री	अस्त
चंद्र	14	मंगल	2	9	12.335806	नहीं	हाँ
मंगल	4	चंद्र	4	5	0.035376	नहीं	नहीं
बुध	14	मंगल	2	9	1.710469	नहीं	हाँ
गुरु	9	बुध	1	7	0.12405	नहीं	नहीं
शुक्र	14	मंगल	2	9	1.25186	नहीं	हाँ
शनि	20	शुक्र	4	12	0.040927	नहीं	नहीं
राहु	21	सूर्य	4	1	-0.226596	हाँ	नहीं
केतु	8	शनि	2	7	-0.226596	हाँ	नहीं
अरुण	19	केतु	4	12	0.027975	नहीं	नहीं
वरुण	20	शुक्र	2	12	0.013483	नहीं	नहीं
यम	16	गुरु	1	10	0.03801	नहीं	नहीं

मैत्री

अयनांश · ID	Lahiri
अयनांश · नाम	N.C. Lahiri
अयनांश · अंश	23.7285

संबंध

	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: Intimate	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: सम	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: मित्र	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: Intimate	नैसर्गिक: शत्रु; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: सम	नैसर्गिक: शत्रु; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: सम
चंद्र		नैसर्गिक: सम; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: शत्रु	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: सम	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: मित्र	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: शत्रु	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: मित्र
मंगल	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: सम		नैसर्गिक: शत्रु; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: Bitter	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: Intimate	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: शत्रु	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: शत्रु
बुध	नैसर्गिक: शत्रु; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: Bitter	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: शत्रु		नैसर्गिक: सम; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: मित्र	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: सम	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: मित्र
गुरु	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: Intimate	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: Intimate	नैसर्गिक: शत्रु; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: सम		नैसर्गिक: शत्रु; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: सम	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: शत्रु
शुक्र	नैसर्गिक: शत्रु; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: Bitter	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: शत्रु	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: सम	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: मित्र		नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: Intimate

	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शनि	नैसर्गिक: शत्रु; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: सम	नैसर्गिक: शत्रु; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: Bitter	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: Intimate	नैसर्गिक: सम; अस्थायी: शत्रु; संयुक्त: शत्रु	नैसर्गिक: मित्र; अस्थायी: मित्र; संयुक्त: Intimate	

विंशोत्तरी दशा

अयनांश · ID	Lahiri
अयनांश · नाम	N.C. Lahiri
अयनांश · अंश	23.7285
चंद्र नक्षत्र · नाम	चित्रा
चंद्र नक्षत्र · पद	2
चंद्र नक्षत्र · स्वामी	मंगल

जन्म के समय शेष

स्वामी	मंगल
वर्ष	4
महीने	7
दिन	11

वर्तमान

की तिथि के अनुसार	2026-11-08
महादशा · स्वामी	गुरु
महादशा · प्रारंभ	2013-05-30
महादशा · अंत	2029-05-30
अंतर्दशा · स्वामी	मंगल
अंतर्दशा · प्रारंभ	2026-01-28
अंतर्दशा · अंत	2027-01-04
प्रत्यन्तर दशा · स्वामी	शुक्र
प्रत्यन्तर दशा · प्रारंभ	2026-09-23
प्रत्यन्तर दशा · अंत	2026-11-19

स्वामियों की तारा

सूर्य	Janma
चंद्र	Janma
मंगल	Parama Mitra
बुध	Janma
गुरु	Pratyak
शुक्र	Janma

शनि	Vadha
राहु	Mitra
केतु	Kshema

महादशाएँ

मंगल

प्रारंभ	1990-10-18
अंत	1995-05-31

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
गुरु	1990-10-18	1990-10-20
शनि	1990-10-20	1991-11-29
बुध	1991-11-29	1992-11-25
केतु	1992-11-25	1993-04-23
शुक्र	1993-04-23	1994-06-23
सूर्य	1994-06-23	1994-10-29
चंद्र	1994-10-29	1995-05-31

राहु

प्रारंभ	1995-05-31
अंत	2013-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
राहु	1995-05-31	1998-02-10
गुरु	1998-02-10	2000-07-06
शनि	2000-07-06	2003-05-13
बुध	2003-05-13	2005-11-29
केतु	2005-11-29	2006-12-18
शुक्र	2006-12-18	2009-12-18
सूर्य	2009-12-18	2010-11-12
चंद्र	2010-11-12	2012-05-13
मंगल	2012-05-13	2013-05-30

गुरु

प्रारंभ	2013-05-30
अंत	2029-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
गुरु	2013-05-30	2015-07-18
शनि	2015-07-18	2018-01-28
बुध	2018-01-28	2020-05-05
केतु	2020-05-05	2021-04-11
शुक्र	2021-04-11	2023-12-11
सूर्य	2023-12-11	2024-09-28

स्वामी	प्रारंभ	अंत
चंद्र	2024-09-28	2026-01-28
मंगल	2026-01-28	2027-01-04
राहु	2027-01-04	2029-05-30

शनि

प्रारंभ	2029-05-30
अंत	2048-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
शनि	2029-05-30	2032-06-02
बुध	2032-06-02	2035-02-10
केतु	2035-02-10	2036-03-21
शुक्र	2036-03-21	2039-05-22
सूर्य	2039-05-22	2040-05-03
चंद्र	2040-05-03	2041-12-02
मंगल	2041-12-02	2043-01-11
राहु	2043-01-11	2045-11-17
गुरु	2045-11-17	2048-05-30

बुध

प्रारंभ	2048-05-30
अंत	2065-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
बुध	2048-05-30	2050-10-27
केतु	2050-10-27	2051-10-24
शुक्र	2051-10-24	2054-08-24
सूर्य	2054-08-24	2055-06-30
चंद्र	2055-06-30	2056-11-28
मंगल	2056-11-28	2057-11-25
राहु	2057-11-25	2060-06-13
गुरु	2060-06-13	2062-09-19
शनि	2062-09-19	2065-05-30

केतु

प्रारंभ	2065-05-30
अंत	2072-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
केतु	2065-05-30	2065-10-26
शुक्र	2065-10-26	2066-12-26
सूर्य	2066-12-26	2067-05-03
चंद्र	2067-05-03	2067-12-02
मंगल	2067-12-02	2068-04-29

स्वामी	प्रारंभ	अंत
राहु	2068-04-29	2069-05-18
गुरु	2069-05-18	2070-04-24
शनि	2070-04-24	2071-06-03
बुध	2071-06-03	2072-05-30

शुक्र

प्रारंभ	2072-05-30
अंत	2092-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
शुक्र	2072-05-30	2075-09-30
सूर्य	2075-09-30	2076-09-29
चंद्र	2076-09-29	2078-05-31
मंगल	2078-05-31	2079-07-31
राहु	2079-07-31	2082-07-31
गुरु	2082-07-31	2085-03-31
शनि	2085-03-31	2088-05-31
बुध	2088-05-31	2091-04-01
केतु	2091-04-01	2092-05-30

सूर्य

प्रारंभ	2092-05-30
अंत	2098-05-31

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
सूर्य	2092-05-30	2092-09-17
चंद्र	2092-09-17	2093-03-19
मंगल	2093-03-19	2093-07-25
राहु	2093-07-25	2094-06-19
गुरु	2094-06-19	2095-04-07
शनि	2095-04-07	2096-03-19
बुध	2096-03-19	2097-01-23
केतु	2097-01-23	2097-05-31
शुक्र	2097-05-31	2098-05-31

चंद्र

प्रारंभ	2098-05-31
अंत	2108-05-31

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
चंद्र	2098-05-31	2099-03-31
मंगल	2099-03-31	2099-10-30
राहु	2099-10-30	2101-05-01
गुरु	2101-05-01	2102-08-31

स्वामी	प्रारंभ	अंत
शनि	2102-08-31	2104-03-31
बुध	2104-03-31	2105-08-30
केतु	2105-08-30	2106-03-31
शुक्र	2106-03-31	2107-11-30
सूर्य	2107-11-30	2108-05-31

दशा फलादेश

अयनांश · ID	Lahiri
नोड	True
लग्न	मकर
लग्नेश	शनि
चंद्र नक्षत्र	चित्रा
प्रणाली	Vimshottari
की तिथि के अनुसार	2026-11-08

महादशा

स्वामी	गुरु
प्रारंभ	2013-05-30
अंत	2029-05-30
स्वामी भाव	7

फलादेश

- नैतिक और धर्मसम्मत साधनों से धन, समृद्धि और सुख की प्राप्ति होगी।
- जातक को शिक्षकों, गुरुओं और दैवी विभूतियों का आशीर्वाद और कृपा प्राप्त होगी।
- संतान असाधारण आनंद, गौरव और सच्चे सुख का स्रोत होगी।
- विवाह और शुभ साझेदारियाँ फलेंगी-फूलेंगी और स्थायी संतोष देंगी।
- जातक अपने ज्ञान, उदारता और नैतिक सत्यनिष्ठा के लिए सम्मानित और प्रतिष्ठित होगा।
- शैक्षिक और आध्यात्मिक प्रयास फलेंगे-फूलेंगे और व्यापक पहचान तथा पुरस्कार दिलाएँगे।
- कानूनी मामले, दर्शन और धार्मिक प्रयास जातक के पक्ष में सुलझेंगे।
- इस शुभ अवधि में ज्ञान, भाग्य और आध्यात्मिक समझ में वृद्धि होगी।

भाव अनुसार फलादेश

- विवाह और साझेदारी में उत्कृष्ट वरदान; जीवनसाथी विवेकशील, नैतिक और समर्पित होगा।
- शिक्षा, कानून, चिकित्सा और परामर्श क्षेत्र में व्यावसायिक साझेदारी अत्यंत अनुकूल और फलदायी होगी।
- जातक न्यायपूर्ण, नैतिक और परस्पर लाभकारी समझौतों और अनुबंधों से समृद्ध होगा।
- कानूनी मामले अनुकूल रूप से सुलझेंगे और संबंध सच्चा विवेक और सुख लाएँगे।
- असाधारण ईमानदारी, विवेक और नैतिक चरित्र वाला जीवनसाथी प्राप्त होगा।
- सच्ची धार्मिकता की शक्ति से जातक सभी क्षेत्रों में लाभकारी साझेदारियाँ आकर्षित करेगा।
- विवाह सुख, वृद्धि, विवेक और जीवन के प्रति जातक की समझ का विस्तार लाएगा।

अंतर्दशा

स्वामी	मंगल
प्रारंभ	2026-01-28
अंत	2027-01-04

फलादेश

- साहसी महत्वाकांक्षा और निर्भीक कर्म वास्तव में उदात्त और योग्य लक्ष्यों की प्राप्ति को प्रेरित करते हैं।

- भूमि-संपत्ति की प्राप्ति और अनुकूल कानूनी परिणामों के प्रबल संकेत हैं।
- भाई और पुरुष संबंधी सार्थक सहयोग और व्यावहारिक सहायता प्रदान करते हैं।
- शारीरिक जीवनशक्ति और आध्यात्मिक ज्ञान शक्तिशाली और फलदायी रूप से मिलते हैं।

लग्न वाचन

लग्न

राशि	मकर
राशि संख्या	10
अंश	23.8936
नक्षत्र	धनिष्ठा
पद	1
तत्व	पृथ्वी
पद्धति	चर
स्वामी	शनि
मूलरूप	ऐसा आरोही जो प्रगति को दशकों में मापता है

स्वामी

ग्रह	शनि
राशि	धनु
भाव	12
बल	सम
वक्री	नहीं
अस्त	नहीं
शक्ति सूचक	Workable

अधिवासी

ग्रह	राशि	अंश	बल	वक्री	प्रकृति	प्रभाव
राहु	मकर	9.9383	सम	हाँ	Malefic	महत्वाकांक्षा, अपरंपरागत उपस्थिति और पहुँच से बाहर की चीज़ों की लालसा जोड़ता है

दृष्टियाँ

ग्रह	भाव से	दृष्टि	बल	प्रकृति
गुरु	7	7th aspect	उच्च	शुभ ग्रह
केतु	7	7th aspect	सम	Malefic

फलादेश

- आपके जन्म के समय मकर लग्न उदित हो रहा था, जिससे शनि आपकी कुण्डली का स्वामी बनता है; यही लग्न वह मूल स्वर तय करता है जिसके संदर्भ में बाकी सब पढ़ा जाता है। पृथ्वी तत्व की चर राशि होने के कारण यह ऐसा स्वभाव देती है जो अनुशासित, यथार्थवादी और प्रतीक्षा के लिए तैयार है — ऐसा आरोही जो प्रगति को दशकों में मापता है।
- आपका जीवन पहल के रूप में आगे बढ़ता है। आप सहजता से कार्य आरंभ करते हैं, और कठिनाई शुरू करने में नहीं, पूरा करने में होती है।
- आपकी कुण्डली का स्वामी शनि 12वें भाव में धनु राशि में स्थित है। इससे आपके जीवन का गुरुत्व-केंद्र उन विषयों में निवेशित है जो दृष्टि से परे हैं: विदेश, एकांत, शोध या आंतरिक जीवन। सामान्य, दिखाई देने वाली उपलब्धियाँ आपको उतना संतोष नहीं देतीं जितना देनी चाहिए।
- वहाँ इसकी स्थिति कार्यक्षम है: धनु में यह प्रभावी ढंग से कार्य करता है, पर अपने परिवेश का रंग ग्रहण कर लेता है। आपके स्व के स्वामी को न तो बल मिलता है और न ही बाधा; वह क्या करता है, यह बहुत हद तक उसकी संगति और चल रही दशा पर निर्भर करता है।

- इसके अतिरिक्त, स्वयं आपके प्रथम भाव में राहु की उपस्थिति है, जिसका सीधा प्रभाव व्यक्तित्व पर पड़ता है। राहु महत्वाकांक्षा, अपरंपरागत उपस्थिति और पहुँच से बाहर की चीज़ों की लालसा जोड़ता है।
- अन्य स्थानों से लग्न पर क्या पड़ता है, यह देखें तो: गुरु लग्न पर दृष्टि डालता है, जिससे इसकी रक्षा होती है — जितना आप ध्यान देते हैं, उससे कहीं अधिक बार आपको संदेह का लाभ मिलता है; केतु इस पर दृष्टि डालता है, जिससे यह कठोर बनता है — आपके स्व पर बाहर से दबाव है, और इसने आपको उससे अधिक सक्षम बनाया है जितना कोई सुविधाजनक कुण्डली बनाती।

काया

नक्षत्र	धनिष्ठा

नोट्स

- मकर लग्न के पृथ्वी तत्व का झुकाव प्रायः इस ओर होता है: सुगठित, मज़बूत काया जो अपनी तंदुरुस्ती बनाए रखती है और देर से थकती है।
- लग्न धनिष्ठा नक्षत्र में उदित है, जो सामान्य चित्र को और परिष्कृत करता है — व्यवहार और रूप-रंग की बारीक विशेषताएँ राशि के बजाय उस नक्षत्र का अनुसरण करती हैं।

शक्तियाँ

- यहाँ मकर लग्न की अपनी छाप ही पूँजी है: स्वभाव सुसंगत है, और जहाँ कोई एक स्थिति विशेष रूप से उभरकर न भी दिखे, वहाँ भी यह सुसंगति जीवन भर संचित होकर बढ़ती जाती है।

चुनौतियाँ

- प्रथम भाव में राहु — महत्वाकांक्षा, अपरंपरागत उपस्थिति और पहुँच से बाहर की चीज़ों की लालसा जोड़ता है, जिसे दूसरे आपकी मंशा से अधिक तीखे रूप में देखते हैं।

दशा फल

लग्न	मकर

दशाएँ

मंगल

महादशा	मंगल
प्रारंभ	1990-10-18
अंत	1995-05-31
राशि	वृषभ
भाव	5
बल	सम
नियम	4, 11
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश

मंगल महादशा आपके 5वें भाव (वृषभ राशि) से चलती है, जहाँ मंगल सम है। आपकी कुण्डली में मंगल 4थे और 11वें भाव का स्वामी है, इसलिए यही वे क्षेत्र हैं जिन पर यह पूरी अवधि कार्य करती है। कुल मिलाकर यह एक मिश्रित अवधि प्रतीत होती है: कुछ क्षेत्रों में वास्तविक लाभ और अन्य में उतनी ही वास्तविक हानि।

अन्तर्दशाएँ

गुरु

स्वामी	गुरु
प्रारंभ	1990-10-18
अंत	1990-10-20
राशि	कर्क

भाव	7
बल	उच्च
नियम	3, 12
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	70

फलादेश
मंगल/गुरु: गुरु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 3रे और 12वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। मंगल महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

शनि

स्वामी	शनि
प्रारंभ	1990-10-20
अंत	1991-11-29
राशि	धनु
भाव	12
बल	सम
नियम	1, 2
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	65

फलादेश
मंगल/शनि: शनि आपके 12वें भाव में धनु राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 1ले और 2रे भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। मंगल महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

बुध

स्वामी	बुध
प्रारंभ	1991-11-29
अंत	1992-11-25
राशि	कन्या
भाव	9
बल	उच्च
नियम	6, 9
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	80

फलादेश
मंगल/बुध: बुध आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 6ठे और 9वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। मंगल महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि सशक्त है।

केतु

स्वामी	केतु
प्रारंभ	1992-11-25
अंत	1993-04-23
राशि	कर्क
भाव	7
बल	सम

नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	मंगल/केतु: केतु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और सम है। मंगल महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

शुक्र

स्वामी	शुक्र
प्रारंभ	1993-04-23
अंत	1994-06-23
राशि	कन्या
भाव	9
बल	नीच
नियम	5, 10
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	38

फलादेश
मंगल/शुक्र: शुक्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 5वें और 10वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। मंगल महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

सूर्य

स्वामी	सूर्य
प्रारंभ	1994-06-23
अंत	1994-10-29
राशि	तुला
भाव	10
बल	नीच
नियम	8
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	20

फलादेश
मंगल/सूर्य: सूर्य आपके 10वें भाव में तुला राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 8वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। मंगल महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

चंद्र

स्वामी	चंद्र
प्रारंभ	1994-10-29
अंत	1995-05-31
राशि	कन्या
भाव	9
बल	सम
नियम	7
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ

गुण	51

फलादेश
मंगल/चन्द्र: चन्द्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 7वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। मंगल महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

राहु

महादशा	राहु
प्रारंभ	1995-05-31
अंत	2013-05-30
राशि	मकर
भाव	1
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश
राहु महादशा आपके 1ले भाव (मकर राशि) से चलती है, जहाँ राहु सम है। राहु किसी राशि का स्वामी नहीं है, इसलिए इस अवधि के पास कार्य करने के लिए अपना कोई भाव-स्वामित्व नहीं है। इसके बजाय यह उस भाव के फल देता है जिसमें यह स्थित है और अपने राशि-स्वामी के फल देता है — इसीलिए किसी पात (राहु/केतु) की महादशा को स्वामित्व से अधिक स्थिति से पढ़ा जाता है। कुल मिलाकर यह एक मिश्रित अवधि प्रतीत होती है: कुछ क्षेत्रों में वास्तविक लाभ और अन्य में उतनी ही वास्तविक हानि।

अन्तर्दशाएँ

राहु

स्वामी	राहु
प्रारंभ	1995-05-31
अंत	1998-02-10
राशि	मकर
भाव	1
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश
राहु/राहु: राहु आपके 1ले भाव में मकर राशि में स्थित है और सम है। यह राहु/राहु अन्तर्दशा है — महादशा स्वामी की अपनी ही अन्तर्दशा, और पूरी अवधि जिन बातों का प्रतिनिधित्व करती है उन सबकी सघन अभिव्यक्ति। राहु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

गुरु

स्वामी	गुरु
प्रारंभ	1998-02-10
अंत	2000-07-06
राशि	कर्क
भाव	7
बल	उच्च
नियम	3, 12

वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	70

फलादेश
राहु/गुरु: गुरु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 3रे और 12वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। राहु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

शनि

स्वामी	शनि
प्रारंभ	2000-07-06
अंत	2003-05-13
राशि	धनु
भाव	12
बल	सम
नियम	1, 2
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	65

फलादेश
राहु/शनि: शनि आपके 12वें भाव में धनु राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 1ले और 2रे भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। राहु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

बुध

स्वामी	बुध
प्रारंभ	2003-05-13
अंत	2005-11-29
राशि	कन्या
भाव	9
बल	उच्च
नियम	6, 9
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	80

फलादेश
राहु/बुध: बुध आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 6ठे और 9वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। राहु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि सशक्त है।

केतु

स्वामी	केतु
प्रारंभ	2005-11-29
अंत	2006-12-18
राशि	कर्क
भाव	7
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं

गुण	55
फलादेश	राहु/केतु: केतु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और सम है। राहु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

शुक्र

स्वामी	शुक्र
प्रारंभ	2006-12-18
अंत	2009-12-18
राशि	कन्या
भाव	9
बल	नीच
नियम	5, 10
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	38

फलादेश
राहु/शुक्र: शुक्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 5वें और 10वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। राहु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

सूर्य

स्वामी	सूर्य
प्रारंभ	2009-12-18
अंत	2010-11-12
राशि	तुला
भाव	10
बल	नीच
नियम	8
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	20

फलादेश
राहु/सूर्य: सूर्य आपके 10वें भाव में तुला राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 8वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। राहु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

चंद्र

स्वामी	चंद्र
प्रारंभ	2010-11-12
अंत	2012-05-13
राशि	कन्या
भाव	9
बल	सम
नियम	7
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	51

फलादेश
राहु/चन्द्र: चन्द्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 7वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। राहु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

मंगल

स्वामी	मंगल
प्रारंभ	2012-05-13
अंत	2013-05-30
राशि	वृषभ
भाव	5
बल	सम
नियम	4, 11
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश
राहु/मंगल: मंगल आपके 5वें भाव में वृषभ राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 4थे और 11वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। राहु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

गुरु

महादशा	गुरु
प्रारंभ	2013-05-30
अंत	2029-05-30
राशि	कर्क
भाव	7
बल	उच्च
नियम	3, 12
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	70

फलादेश
गुरु महादशा आपके 7वें भाव (कर्क राशि) से चलती है, जहाँ गुरु उच्च है। आपकी कुण्डली में गुरु 3रे और 12वें भाव का स्वामी है, इसलिए यही वे क्षेत्र हैं जिन पर यह पूरी अवधि कार्य करती है। कुल मिलाकर यह एक सहायक अवधि प्रतीत होती है, बशर्ते आप प्रयास करें; यह आपको अपने-आप आगे नहीं ले जाएगी।

अन्तर्दशाएँ

गुरु

स्वामी	गुरु
प्रारंभ	2013-05-30
अंत	2015-07-18
राशि	कर्क
भाव	7
बल	उच्च
नियम	3, 12
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	70

फलादेश
गुरु/गुरु: गुरु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 3रे और 12वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। यह गुरु/गुरु अन्तर्दशा है — महादशा स्वामी की अपनी ही अन्तर्दशा, और पूरी अवधि जिन बातों का प्रतिनिधित्व करती है उन सबकी सघन अभिव्यक्ति। गुरु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि सशक्त है।

शनि

स्वामी	शनि
प्रारंभ	2015-07-18
अंत	2018-01-28
राशि	धनु
भाव	12
बल	सम
नियम	1, 2
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	65

फलादेश
गुरु/शनि: शनि आपके 12वें भाव में धनु राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 1ले और 2रे भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। गुरु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

बुध

स्वामी	बुध
प्रारंभ	2018-01-28
अंत	2020-05-05
राशि	कन्या
भाव	9
बल	उच्च
नियम	6, 9
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	80

फलादेश
गुरु/बुध: बुध आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 6ठे और 9वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। गुरु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि सशक्त है।

केतु

स्वामी	केतु
प्रारंभ	2020-05-05
अंत	2021-04-11
राशि	कर्क
भाव	7
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	गुरु/केतु: केतु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और सम है। गुरु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

शुक्र

स्वामी	शुक्र
प्रारंभ	2021-04-11
अंत	2023-12-11
राशि	कन्या
भाव	9
बल	नीच
नियम	5, 10
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	38

फलादेश
गुरु/शुक्र: शुक्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 5वें और 10वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। गुरु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

सूर्य

स्वामी	सूर्य
प्रारंभ	2023-12-11
अंत	2024-09-28
राशि	तुला
भाव	10
बल	नीच
नियम	8
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	20

फलादेश
गुरु/सूर्य: सूर्य आपके 10वें भाव में तुला राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 8वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। गुरु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

चंद्र

स्वामी	चंद्र
प्रारंभ	2024-09-28
अंत	2026-01-28
राशि	कन्या
भाव	9
बल	सम
नियम	7
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	51

फलादेश
गुरु/चन्द्र: चन्द्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 7वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। गुरु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

मंगल

स्वामी	मंगल

प्रारंभ	2026-01-28
अंत	2027-01-04
राशि	वृषभ
भाव	5
बल	सम
नियम	4, 11
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश
गुरु/मंगल: मंगल आपके 5वें भाव में वृषभ राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 4थे और 11वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। गुरु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

राहु

स्वामी	राहु
प्रारंभ	2027-01-04
अंत	2029-05-30
राशि	मकर
भाव	1
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	गुरु/राहु: राहु आपके 1ले भाव में मकर राशि में स्थित है और सम है। गुरु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

शनि

महादशा	शनि
प्रारंभ	2029-05-30
अंत	2048-05-30
राशि	धनु
भाव	12
बल	सम
नियम	1, 2
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	65

फलादेश
शनि महादशा आपके 12वें भाव (धनु राशि) से चलती है, जहाँ शनि सम है। आपकी कुण्डली में शनि 1ले और 2रे भाव का स्वामी है, इसलिए यही वे क्षेत्र हैं जिन पर यह पूरी अवधि कार्य करती है। कुल मिलाकर यह एक सहायक अवधि प्रतीत होती है, बशर्ते आप प्रयास करें; यह आपको अपने-आप आगे नहीं ले जाएगी।

अन्तर्दशाएँ

शनि

स्वामी	शनि
प्रारंभ	2029-05-30

अंत	2032-06-02
राशि	धनु
भाव	12
बल	सम
नियम	1, 2
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	65

फलादेश
शनि/शनि: शनि आपके 12वें भाव में धनु राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 1ले और 2रे भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। यह शनि/शनि अन्तर्दशा है — महादशा स्वामी की अपनी ही अन्तर्दशा, और पूरी अवधि जिन बातों का प्रतिनिधित्व करती है उन सबकी सघन अभिव्यक्ति। शनि महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

बुध

स्वामी	बुध
प्रारंभ	2032-06-02
अंत	2035-02-10
राशि	कन्या
भाव	9
बल	उच्च
नियम	6, 9
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	80

फलादेश
शनि/बुध: बुध आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 6ठे और 9वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शनि महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि सशक्त है।

केतु

स्वामी	केतु
प्रारंभ	2035-02-10
अंत	2036-03-21
राशि	कर्क
भाव	7
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	शनि/केतु: केतु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और सम है। शनि महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

शुक्र

स्वामी	शुक्र
प्रारंभ	2036-03-21
अंत	2039-05-22
राशि	कन्या

भाव	9
बल	नीच
नियम	5, 10
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	38

फलादेश
शनि/शुक्र: शुक्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 5वें और 10वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शनि महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

सूर्य

स्वामी	सूर्य
प्रारंभ	2039-05-22
अंत	2040-05-03
राशि	तुला
भाव	10
बल	नीच
नियम	8
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	20

फलादेश
शनि/सूर्य: सूर्य आपके 10वें भाव में तुला राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 8वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शनि महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

चंद्र

स्वामी	चंद्र
प्रारंभ	2040-05-03
अंत	2041-12-02
राशि	कन्या
भाव	9
बल	सम
नियम	7
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	51

फलादेश
शनि/चन्द्र: चन्द्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 7वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शनि महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

मंगल

स्वामी	मंगल
प्रारंभ	2041-12-02
अंत	2043-01-11
राशि	वृषभ
भाव	5
बल	सम

नियम	4, 11
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश
शनि/मंगल: मंगल आपके 5वें भाव में वृषभ राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 4थे और 11वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शनि महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

राहु

स्वामी	राहु
प्रारंभ	2043-01-11
अंत	2045-11-17
राशि	मकर
भाव	1
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	शनि/राहु: राहु आपके 1ले भाव में मकर राशि में स्थित है और सम है। शनि महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

गुरु

स्वामी	गुरु
प्रारंभ	2045-11-17
अंत	2048-05-30
राशि	कर्क
भाव	7
बल	उच्च
नियम	3, 12
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	70

फलादेश
शनि/गुरु: गुरु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 3रे और 12वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शनि महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

बुध

महादशा	बुध
प्रारंभ	2048-05-30
अंत	2065-05-30
राशि	कन्या
भाव	9
बल	उच्च
नियम	6, 9
वक्री	नहीं

शुभ ग्रह	हाँ
गुण	80

फलादेश
बुध महादशा आपके 9वें भाव (कन्या राशि) से चलती है, जहाँ बुध उच्च है। आपकी कुण्डली में बुध 6ठे और 9वें भाव का स्वामी है, इसलिए यही वे क्षेत्र हैं जिन पर यह पूरी अवधि कार्य करती है। कुल मिलाकर यह आपके जीवन की बेहतर अवधियों में से एक प्रतीत होती है — परिणाम सामान्य से कम प्रतिरोध के साथ मिलते हैं।

अन्तर्दशाएँ

बुध

स्वामी	बुध
प्रारंभ	2048-05-30
अंत	2050-10-27
राशि	कन्या
भाव	9
बल	उच्च
नियम	6, 9
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	80

फलादेश
बुध/बुध: बुध आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 6ठे और 9वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। यह बुध/बुध अन्तर्दशा है — महादशा स्वामी की अपनी ही अन्तर्दशा, और पूरी अवधि जिन बातों का प्रतिनिधित्व करती है उन सबकी सघन अभिव्यक्ति। बुध महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि सशक्त है।

केतु

स्वामी	केतु
प्रारंभ	2050-10-27
अंत	2051-10-24
राशि	कर्क
भाव	7
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	बुध/केतु: केतु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और सम है। बुध महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

शुक्र

स्वामी	शुक्र
प्रारंभ	2051-10-24
अंत	2054-08-24
राशि	कन्या
भाव	9
बल	नीच
नियम	5, 10
वक्री	नहीं

शुभ ग्रह	हाँ
गुण	38

फलादेश
बुध/शुक्र: शुक्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 5वें और 10वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। बुध महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

सूर्य

स्वामी	सूर्य
प्रारंभ	2054-08-24
अंत	2055-06-30
राशि	तुला
भाव	10
बल	नीच
नियम	8
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	20

फलादेश
बुध/सूर्य: सूर्य आपके 10वें भाव में तुला राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 8वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। बुध महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

चंद्र

स्वामी	चंद्र
प्रारंभ	2055-06-30
अंत	2056-11-28
राशि	कन्या
भाव	9
बल	सम
नियम	7
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	51

फलादेश
बुध/चन्द्र: चन्द्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 7वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। बुध महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

मंगल

स्वामी	मंगल
प्रारंभ	2056-11-28
अंत	2057-11-25
राशि	वृषभ
भाव	5
बल	सम
नियम	4, 11
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश
बुध/मंगल: मंगल आपके 5वें भाव में वृषभ राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 4थे और 11वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। बुध महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

राहु

स्वामी	राहु
प्रारंभ	2057-11-25
अंत	2060-06-13
राशि	मकर
भाव	1
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	बुध/राहु: राहु आपके 1ले भाव में मकर राशि में स्थित है और सम है। बुध महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

गुरु

स्वामी	गुरु
प्रारंभ	2060-06-13
अंत	2062-09-19
राशि	कर्क
भाव	7
बल	उच्च
नियम	3, 12
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	70

फलादेश
बुध/गुरु: गुरु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 3रे और 12वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। बुध महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि सशक्त है।

शनि

स्वामी	शनि
प्रारंभ	2062-09-19
अंत	2065-05-30
राशि	धनु
भाव	12
बल	सम
नियम	1, 2
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	65

फलादेश
बुध/शनि: शनि आपके 12वें भाव में धनु राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 1ले और 2रे भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। बुध महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि सशक्त है।

केतु

महादशा	केतु
प्रारंभ	2065-05-30
अंत	2072-05-30
राशि	कर्क
भाव	7
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश

केतु महादशा आपके 7वें भाव (कर्क राशि) से चलती है, जहाँ केतु सम है। केतु किसी राशि का स्वामी नहीं है, इसलिए इस अवधि के पास कार्य करने के लिए अपना कोई भाव-स्वामित्व नहीं है। इसके बजाय यह उस भाव के फल देता है जिसमें यह स्थित है और अपने राशि-स्वामी के फल देता है — इसीलिए किसी पात (राहु/केतु) की महादशा को स्वामित्व से अधिक स्थिति से पढ़ा जाता है। कुल मिलाकर यह एक मिश्रित अवधि प्रतीत होती है: कुछ क्षेत्रों में वास्तविक लाभ और अन्य में उतनी ही वास्तविक हानि।

अन्तर्दशाएँ

केतु

स्वामी	केतु
प्रारंभ	2065-05-30
अंत	2065-10-26
राशि	कर्क
भाव	7
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश

केतु/केतु: केतु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और सम है। यह केतु/केतु अन्तर्दशा है — महादशा स्वामी की अपनी ही अन्तर्दशा, और पूरी अवधि जिन बातों का प्रतिनिधित्व करती है उन सबकी सघन अभिव्यक्ति। केतु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

शुक्र

स्वामी	शुक्र
प्रारंभ	2065-10-26
अंत	2066-12-26
राशि	कन्या
भाव	9
बल	नीच
नियम	5, 10
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	38

फलादेश
केतु/शुक्र: शुक्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 5वें और 10वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। केतु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

सूर्य

स्वामी	सूर्य
प्रारंभ	2066-12-26
अंत	2067-05-03
राशि	तुला
भाव	10
बल	नीच
नियम	8
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	20

फलादेश
केतु/सूर्य: सूर्य आपके 10वें भाव में तुला राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 8वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। केतु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

चंद्र

स्वामी	चंद्र
प्रारंभ	2067-05-03
अंत	2067-12-02
राशि	कन्या
भाव	9
बल	सम
नियम	7
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	51

फलादेश
केतु/चन्द्र: चन्द्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 7वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। केतु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

मंगल

स्वामी	मंगल
प्रारंभ	2067-12-02
अंत	2068-04-29
राशि	वृषभ
भाव	5
बल	सम
नियम	4, 11
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश
केतु/मंगल: मंगल आपके 5वें भाव में वृषभ राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 4थे और 11वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। केतु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

राहु

स्वामी	राहु
प्रारंभ	2068-04-29
अंत	2069-05-18
राशि	मकर
भाव	1
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	केतु/राहु: राहु आपके 1ले भाव में मकर राशि में स्थित है और सम है। केतु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

गुरु

स्वामी	गुरु
प्रारंभ	2069-05-18
अंत	2070-04-24
राशि	कर्क
भाव	7
बल	उच्च
नियम	3, 12
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	70

फलादेश
केतु/गुरु: गुरु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 3रे और 12वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। केतु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

शनि

स्वामी	शनि
प्रारंभ	2070-04-24
अंत	2071-06-03
राशि	धनु
भाव	12
बल	सम
नियम	1, 2
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	65

फलादेश
केतु/शनि: शनि आपके 12वें भाव में धनु राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 1ले और 2रे भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। केतु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

बुध

स्वामी	बुध
प्रारंभ	2071-06-03

अंत	2072-05-30
राशि	कन्या
भाव	9
बल	उच्च
नियम	6, 9
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	80

फलादेश
केतु/बुध: बुध आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 6ठे और 9वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। केतु महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि सशक्त है।

शुक्र

महादशा	शुक्र
प्रारंभ	2072-05-30
अंत	2092-05-30
राशि	कन्या
भाव	9
बल	नीच
नियम	5, 10
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	38

फलादेश
शुक्र महादशा आपके 9वें भाव (कन्या राशि) से चलती है, जहाँ शुक्र नीच है। आपकी कुण्डली में शुक्र 5वें और 10वें भाव का स्वामी है, इसलिए यही वे क्षेत्र हैं जिन पर यह पूरी अवधि कार्य करती है। कुल मिलाकर यह एक चुनौतीपूर्ण अवधि प्रतीत होती है। यह सुविधा के बजाय क्षमता का निर्माण करती है, और महत्वाकांक्षा की तुलना में धैर्य का कहीं बेहतर प्रतिफल देती है।

अन्तर्दशाएँ

शुक्र

स्वामी	शुक्र
प्रारंभ	2072-05-30
अंत	2075-09-30
राशि	कन्या
भाव	9
बल	नीच
नियम	5, 10
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	38

फलादेश
शुक्र/शुक्र: शुक्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 5वें और 10वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। यह शुक्र/शुक्र अन्तर्दशा है — महादशा स्वामी की अपनी ही अन्तर्दशा, और पूरी अवधि जिन बातों का प्रतिनिधित्व करती है उन सबकी सघन अभिव्यक्ति। शुक्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

सूर्य

स्वामी	सूर्य

प्रारंभ	2075-09-30
अंत	2076-09-29
राशि	तुला
भाव	10
बल	नीच
नियम	8
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	20

फलादेश
शुक्र/सूर्य: सूर्य आपके 10वें भाव में तुला राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 8वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शुक्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

चंद्र

स्वामी	चंद्र
प्रारंभ	2076-09-29
अंत	2078-05-31
राशि	कन्या
भाव	9
बल	सम
नियम	7
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	51

फलादेश
शुक्र/चन्द्र: चन्द्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 7वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शुक्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

मंगल

स्वामी	मंगल
प्रारंभ	2078-05-31
अंत	2079-07-31
राशि	वृषभ
भाव	5
बल	सम
नियम	4, 11
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश
शुक्र/मंगल: मंगल आपके 5वें भाव में वृषभ राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 4थे और 11वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शुक्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

राहु

स्वामी	राहु
प्रारंभ	2079-07-31
अंत	2082-07-31

राशि	मकर
भाव	1
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	शुक्र/राहु: राहु आपके 1ले भाव में मकर राशि में स्थित है और सम है। शुक्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

गुरु

स्वामी	गुरु
प्रारंभ	2082-07-31
अंत	2085-03-31
राशि	कर्क
भाव	7
बल	उच्च
नियम	3, 12
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	70

फलादेश
शुक्र/गुरु: गुरु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 3रे और 12वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शुक्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

शनि

स्वामी	शनि
प्रारंभ	2085-03-31
अंत	2088-05-31
राशि	धनु
भाव	12
बल	सम
नियम	1, 2
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	65

फलादेश
शुक्र/शनि: शनि आपके 12वें भाव में धनु राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 1ले और 2रे भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शुक्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

बुध

स्वामी	बुध
प्रारंभ	2088-05-31
अंत	2091-04-01
राशि	कन्या
भाव	9
बल	उच्च

नियम	6, 9
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	80

फलादेश
शुक्र/बुध: बुध आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 6ठे और 9वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। शुक्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

केतु

स्वामी	केतु
प्रारंभ	2091-04-01
अंत	2092-05-30
राशि	कर्क
भाव	7
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	शुक्र/केतु: केतु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और सम है। शुक्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

सूर्य

महादशा	सूर्य
प्रारंभ	2092-05-30
अंत	2098-05-31
राशि	तुला
भाव	10
बल	नीच
नियम	8
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	20

फलादेश
सूर्य महादशा आपके 10वें भाव (तुला राशि) से चलती है, जहाँ सूर्य नीच है। आपकी कुण्डली में सूर्य 8वें भाव का स्वामी है, इसलिए यही वे क्षेत्र हैं जिन पर यह पूरी अवधि कार्य करती है। कुल मिलाकर यह एक चुनौतीपूर्ण अवधि प्रतीत होती है। यह सुविधा के बजाय क्षमता का निर्माण करती है, और महत्वाकांक्षा की तुलना में धैर्य का कहीं बेहतर प्रतिफल देती है।

अन्तर्दशाएँ

सूर्य

स्वामी	सूर्य
प्रारंभ	2092-05-30
अंत	2092-09-17
राशि	तुला
भाव	10
बल	नीच
नियम	8

वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	20

फलादेश
सूर्य/सूर्य: सूर्य आपके 10वें भाव में तुला राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 8वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। यह सूर्य/सूर्य अन्तर्दशा है — महादशा स्वामी की अपनी ही अन्तर्दशा, और पूरी अवधि जिन बातों का प्रतिनिधित्व करती है उन सबकी सघन अभिव्यक्ति। सूर्य महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

चंद्र

स्वामी	चंद्र
प्रारंभ	2092-09-17
अंत	2093-03-19
राशि	कन्या
भाव	9
बल	सम
नियम	7
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	51

फलादेश
सूर्य/चन्द्र: चन्द्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 7वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। सूर्य महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

मंगल

स्वामी	मंगल
प्रारंभ	2093-03-19
अंत	2093-07-25
राशि	वृषभ
भाव	5
बल	सम
नियम	4, 11
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश
सूर्य/मंगल: मंगल आपके 5वें भाव में वृषभ राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 4थे और 11वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। सूर्य महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

राहु

स्वामी	राहु
प्रारंभ	2093-07-25
अंत	2094-06-19
राशि	मकर
भाव	1
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ

शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	सूर्य/राहु: राहु आपके 1ले भाव में मकर राशि में स्थित है और सम है। सूर्य महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

गुरु

स्वामी	गुरु
प्रारंभ	2094-06-19
अंत	2095-04-07
राशि	कर्क
भाव	7
बल	उच्च
नियम	3, 12
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	70

फलादेश
सूर्य/गुरु: गुरु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 3रे और 12वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। सूर्य महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

शनि

स्वामी	शनि
प्रारंभ	2095-04-07
अंत	2096-03-19
राशि	धनु
भाव	12
बल	सम
नियम	1, 2
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	65

फलादेश
सूर्य/शनि: शनि आपके 12वें भाव में धनु राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 1ले और 2रे भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। सूर्य महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

बुध

स्वामी	बुध
प्रारंभ	2096-03-19
अंत	2097-01-23
राशि	कन्या
भाव	9
बल	उच्च
नियम	6, 9
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	80

फलादेश
सूर्य/बुध: बुध आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 6ठे और 9वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। सूर्य महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

केतु

स्वामी	केतु
प्रारंभ	2097-01-23
अंत	2097-05-31
राशि	कर्क
भाव	7
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	सूर्य/केतु: केतु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और सम है। सूर्य महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

शुक्र

स्वामी	शुक्र
प्रारंभ	2097-05-31
अंत	2098-05-31
राशि	कन्या
भाव	9
बल	नीच
नियम	5, 10
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	38

फलादेश
सूर्य/शुक्र: शुक्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 5वें और 10वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। सूर्य महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

चंद्र

महादशा	चंद्र
प्रारंभ	2098-05-31
अंत	2108-05-31
राशि	कन्या
भाव	9
बल	सम
नियम	7
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	51

फलादेश
चन्द्र महादशा आपके 9वें भाव (कन्या राशि) से चलती है, जहाँ चन्द्र सम है। आपकी कुण्डली में चन्द्र 7वें भाव का स्वामी है, इसलिए यही वे क्षेत्र हैं जिन पर यह पूरी अवधि कार्य करती है। कुल मिलाकर यह एक मिश्रित अवधि प्रतीत होती है: कुछ क्षेत्रों में वास्तविक लाभ और अन्य में उतनी ही वास्तविक हानि।

अन्तर्दशाएँ

चंद्र

स्वामी	चंद्र
प्रारंभ	2098-05-31
अंत	2099-03-31
राशि	कन्या
भाव	9
बल	सम
नियम	7
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	51

फलादेश
चन्द्र/चन्द्र: चन्द्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 7वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। यह चन्द्र/चन्द्र अन्तर्दशा है — महादशा स्वामी की अपनी ही अन्तर्दशा, और पूरी अवधि जिन बातों का प्रतिनिधित्व करती है उन सबकी सघन अभिव्यक्ति। चन्द्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

मंगल

स्वामी	मंगल
प्रारंभ	2099-03-31
अंत	2099-10-30
राशि	वृषभ
भाव	5
बल	सम
नियम	4, 11
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55

फलादेश
चन्द्र/मंगल: मंगल आपके 5वें भाव में वृषभ राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 4थे और 11वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। चन्द्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

राहु

स्वामी	राहु
प्रारंभ	2099-10-30
अंत	2101-05-01
राशि	मकर
भाव	1
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	चन्द्र/राहु: राहु आपके 1ले भाव में मकर राशि में स्थित है और सम है। चन्द्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

गुरु

स्वामी	गुरु
प्रारंभ	2101-05-01
अंत	2102-08-31
राशि	कर्क
भाव	7
बल	उच्च
नियम	3, 12
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	70

फलादेश
चन्द्र/गुरु: गुरु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 3रे और 12वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। चन्द्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

शनि

स्वामी	शनि
प्रारंभ	2102-08-31
अंत	2104-03-31
राशि	धनु
भाव	12
बल	सम
नियम	1, 2
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	65

फलादेश
चन्द्र/शनि: शनि आपके 12वें भाव में धनु राशि में स्थित है और सम है। यह आपके लिए 1ले और 2रे भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। चन्द्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

बुध

स्वामी	बुध
प्रारंभ	2104-03-31
अंत	2105-08-30
राशि	कन्या
भाव	9
बल	उच्च
नियम	6, 9
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	80

फलादेश
चन्द्र/बुध: बुध आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और उच्च है। यह आपके लिए 6ठे और 9वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। चन्द्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि अनुकूल है।

केतु

स्वामी	केतु

प्रारंभ	2105-08-30
अंत	2106-03-31
राशि	कर्क
भाव	7
बल	सम
नियम	—
वक्री	हाँ
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	55
फलादेश	चन्द्र/केतु: केतु आपके 7वें भाव में कर्क राशि में स्थित है और सम है। चन्द्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि मिश्रित है।

शुक्र

स्वामी	शुक्र
प्रारंभ	2106-03-31
अंत	2107-11-30
राशि	कन्या
भाव	9
बल	नीच
नियम	5, 10
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	हाँ
गुण	38

फलादेश
चन्द्र/शुक्र: शुक्र आपके 9वें भाव में कन्या राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 5वें और 10वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। चन्द्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

सूर्य

स्वामी	सूर्य
प्रारंभ	2107-11-30
अंत	2108-05-31
राशि	तुला
भाव	10
बल	नीच
नियम	8
वक्री	नहीं
शुभ ग्रह	नहीं
गुण	20

फलादेश
चन्द्र/सूर्य: सूर्य आपके 10वें भाव में तुला राशि में स्थित है और नीच है। यह आपके लिए 8वें भाव का स्वामी है, और यह अन्तर्दशा इन्हीं भावों के विषयों को सामने लाती है। चन्द्र महादशा के साथ मिलाकर पढ़ें तो यह अवधि चुनौतीपूर्ण है।

योग

ज्ञात	70

प्रधान

Hamsa Yoga

श्रेणी	Panch Mahapurusha
विवरण	गुरु कर्क में (भाव 7) — स्वराशि/उच्च, केन्द्र।
विवरण	गुरु किसी केन्द्र भाव में स्वराशि (धनु/मीन) या उच्च राशि (कर्क) में।
प्रभाव	ज्ञानी, सद्गुणी, सुंदर, कमल समान चरण। राजपरिवार द्वारा सम्मानित। धर्मनिष्ठ और समृद्ध। आयु 82 वर्ष।
शक्ति	Strong
समूह	Panch maha

Venus — Yoga Karaka

श्रेणी	Yoga Karaka
विवरण	मकर लग्न के लिए शुक्र भाव 10 (केन्द्र) + 5 (त्रिकोण) का स्वामी है। वर्तमान में कन्या (भाव 9) में स्थित।
विवरण	एक साथ केन्द्र (चतुर्थ/सप्तम/दशम) और त्रिकोण (पंचम/नवम) दोनों का स्वामी ग्रह परम योगकारक बन जाता है — मकर लग्न के लिए सर्वाधिक शुभ ग्रह।
प्रभाव	सबसे शक्तिशाली राजयोग-दाता। जब योगकारक की दशा चलती है, तब जीवन, धन, प्रतिष्ठा में ज़बरदस्त उन्नति और इच्छाओं की पूर्ति होती है।
शक्ति	Strong
समूह	Yoga karakas

राजयोग — चन्द्र (7वें भाव का स्वामी) + शुक्र (5वें भाव का स्वामी)

श्रेणी	Raj Yoga
विवरण	चन्द्र (7वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) और शुक्र (5वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) युति हैं।
विवरण	7वें भाव (केन्द्र) के स्वामी का 5वें भाव (त्रिकोण) के स्वामी से संबंध शास्त्रीय राजयोग बनाता है।
प्रभाव	प्रतिष्ठा, अधिकार, धन, मान्यता। इनकी संयुक्त दशा अवधियों में शक्तिशाली।
शक्ति	Strong
समूह	राज योग

राजयोग — चन्द्र (7वें भाव का स्वामी) + बुध (9वें भाव का स्वामी)

श्रेणी	Raj Yoga
विवरण	चन्द्र (7वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) और बुध (9वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) युति हैं।
विवरण	7वें भाव (केन्द्र) के स्वामी का 9वें भाव (त्रिकोण) के स्वामी से संबंध शास्त्रीय राजयोग बनाता है।
प्रभाव	प्रतिष्ठा, अधिकार, धन, मान्यता। इनकी संयुक्त दशा अवधियों में शक्तिशाली।
शक्ति	Strong
समूह	राज योग

राजयोग — शुक्र (10वें और 5वें भाव का स्वामी)

श्रेणी	Raj Yoga
विवरण	शुक्र 10वें (केन्द्र) और 5वें (त्रिकोण) दोनों भावों का स्वामी है। कन्या (भाव 9) में स्थित।
विवरण	केन्द्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी ग्रह शक्तिशाली राजयोग देता है।
प्रभाव	पद, धन, अधिकार में उन्नति। इसकी दशा/अन्तर्दशा में प्रबल।

शक्ति	Strong
समूह	राज योग

राजयोग — शुक्र (10वें भाव का स्वामी) + बुध (9वें भाव का स्वामी)

श्रेणी	Raj Yoga
विवरण	शुक्र (10वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) और बुध (9वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) युति हैं।
विवरण	10वें भाव (केन्द्र) के स्वामी का 9वें भाव (त्रिकोण) के स्वामी से संबंध शास्त्रीय राजयोग बनाता है।
प्रभाव	प्रतिष्ठा, अधिकार, धन, मान्यता। इनकी संयुक्त दशा अवधियों में शक्तिशाली।
शक्ति	Strong
समूह	राज योग

नीचभंग राजयोग — सूर्य

श्रेणी	Neecha Bhanga Raj Yoga

विवरण
सूर्य तुला में नीच का (भाव 10)। भंग: शुक्र (उसकी राशि का स्वामी) चन्द्र से केन्द्र में (चन्द्र से 1ले भाव में); शनि (वहाँ उच्च का) चन्द्र से केन्द्र में (चन्द्र से 4थे भाव में)।

विवरण	सूर्य तुला में नीच है। जब नीचत्व भंग होता है, तो ग्रह अत्यंत शक्तिशाली हो जाता है — नीचभंग राजयोग बनता है।
प्रभाव	बनने पर: जीवन, धन और अधिकार में ज़बरदस्त उन्नति। जातक साधारण शुरुआत से महान ऊँचाइयों तक पहुँचता है, विशेषकर उस ग्रह की दशा में।
शक्ति	Strong
समूह	Neecha bhanga

नीचभंग राजयोग — शुक्र

श्रेणी	Neecha Bhanga Raj Yoga

विवरण
शुक्र कन्या में नीच का (भाव 9)। भंग: बुध (उसकी राशि का स्वामी और वहाँ उच्च का) चन्द्र से केन्द्र में (चन्द्र से 1ले भाव में); बुध (उसकी राशि का स्वामी और वहाँ उच्च का) कन्या में उसके साथ युति में।

विवरण	शुक्र कन्या में नीच है। जब नीचत्व भंग होता है, तो ग्रह अत्यंत शक्तिशाली हो जाता है — नीचभंग राजयोग बनता है।
प्रभाव	बनने पर: जीवन, धन और अधिकार में ज़बरदस्त उन्नति। जातक साधारण शुरुआत से महान ऊँचाइयों तक पहुँचता है, विशेषकर उस ग्रह की दशा में।
शक्ति	Strong
समूह	Neecha bhanga

Chandra-Budha Yoga

श्रेणी	Special Yoga
विवरण	चन्द्र कन्या में (भाव 9), बुध कन्या में (भाव 9)।
विवरण	चन्द्र और बुध की युति — बुद्धिमान, कल्पनाशील, कलात्मक योग।
प्रभाव	तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छी स्मरणशक्ति, लेखन कौशल, भावनात्मक बुद्धिमत्ता। संचार क्षेत्र में सफलता।
शक्ति	Strong
समूह	Special yogas

Saraswati Yoga

श्रेणी	Special Yoga
विवरण	बुध (भाव 9), गुरु (भाव 7), शुक्र (भाव 9)। सभी केन्द्र/त्रिकोण/द्वितीय में ✓। गुरु स्वराशि/उच्च ✓।
विवरण	बुध, शुक्र, गुरु सभी केन्द्र, त्रिकोण या 2रे भाव में; गुरु स्वराशि/उच्च में।
प्रभाव	विद्वान, कवि, दार्शनिक। देवी सरस्वती का आशीर्वाद। ज्ञान, वाक्पटुता, ललित कलाएँ।
शक्ति	Strong
समूह	Special yogas

Saturn — Lagna Lord

श्रेणी	Yoga Karaka
विवरण	मकर लग्न के लिए लग्नेश शनि। धनु (भाव 12) में स्थित।

विवरण
लग्नेश सदैव कुण्डली का सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है। 1ले भाव (जो केन्द्र और त्रिकोण दोनों है) का स्वामी होने के कारण यह स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की समग्र दिशा का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रभाव	बलवान और शुभ स्थिति वाला लग्नेश स्वास्थ्य, दीर्घायु, अच्छा चरित्र और सभी प्रयासों में सफलता देता है। दुर्बल लग्नेश स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ दर्शाता है।
शक्ति	Moderate
समूह	Yoga karakas

Gaja-Kesari Dhana variant

श्रेणी	Dhana Yoga
विवरण	गुरु (भाव 7) और चन्द्र (भाव 9) दोनों केन्द्र/त्रिकोण में।
विवरण	गुरु और चन्द्र दोनों केन्द्र या त्रिकोण में — गजकेसरी योग का प्रबल धन रूप।
प्रभाव	ज्ञान और संपर्कों से धनवान। लोकप्रिय और समृद्ध। सलाहकारों/गुरुओं से लाभ।
शक्ति	Moderate
समूह	Dhana yogas

Voshi Yoga

श्रेणी	Surya Yoga
विवरण	सूर्य से द्वादश भाव (भाव 9) में ग्रह: बुध, शुक्र।
विवरण	सूर्य से 12वें भाव में चन्द्र के अतिरिक्त कोई ग्रह।
प्रभाव	सत्यवादी, ज्ञानी, सुखी, सम्मानित, स्थिर। परिश्रम से पहचान।
शक्ति	Moderate
समूह	Surya yogas

Guru-Chandal Yoga (Jupiter+Ketu)

श्रेणी	Special Yoga
विवरण	गुरु कर्क (भाव 7) में, केतु भाव 7 में।
विवरण	गुरु की केतु से युति — अपारंपरिक ज्ञान, विदेशी गुरु, विवादास्पद मान्यताएँ।
प्रभाव	अपरंपरागत विस्तार, विदेशी संबंध, आध्यात्मिक विद्रोह। मिश्रित परिणाम।
शक्ति	मिश्रित
समूह	Special yogas

सहायक

कर्माजीव — 10वें भाव में सूर्य (सरकार/अधिकार)

श्रेणी	Karmajiva Yoga
विवरण	सूर्य भाव 10 में (तुला)।
विवरण	सूर्य 10वें भाव में — सरकार, प्रशासन, राजपरिवार या अधिकार के माध्यम से करियर।
प्रभाव	सरकारी नौकरी, राजनीति, प्रशासन, चिकित्सा (शल्य चिकित्सा), बैंकिंग। अधिकार और नेतृत्व की भूमिका।
शक्ति	Strong
समूह	Karmajiva yogas

शुभ-कर्माजीव योग — 10वें भाव का स्वामी शुभ ग्रह के साथ

श्रेणी	Karmajiva Yoga
विवरण	दशमेश शुक्र भाव 9 में बुध के साथ।
विवरण	10वें भाव के स्वामी की किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह से युति — शुभ करियर योग।
प्रभाव	प्रतिष्ठित व्यवसाय, सम्मानित करियर, कार्य से आर्थिक लाभ। धर्मसम्मत आजीविका।
शक्ति	Strong
समूह	Karmajiva yogas

अरिष्ट-भंग योग (चन्द्र से केन्द्र में शुभ ग्रह)

श्रेणी	Longevity Extended
विवरण	चन्द्र (राशि 6) से केन्द्र में शुभ ग्रह: बुध, शुक्र।
विवरण	चन्द्र से केन्द्र में नैसर्गिक शुभ ग्रह — अरिष्ट का प्राथमिक भंग।
प्रभाव	संकट या बालारिष्ट बहुत कम हो जाता है। शुभ ग्रह चन्द्र और जातक की रक्षा करता है। प्रतिकूल संकेतों के बावजूद जीवन चलता रहता है। रक्षक और जीवन-पोषक।
शक्ति	Strong
समूह	Longevity extended

Arishta-Bhanga Yoga (Jupiter Aspects Lagna/Moon)

श्रेणी	Longevity Extended
विवरण	गुरु की लग्न पर दृष्टि: हाँ; गुरु की चन्द्र पर दृष्टि: नहीं।
विवरण	लग्न या चन्द्र पर गुरु की दृष्टि जीवन-घातक अरिष्टों को भंग करती है।

प्रभाव
गुरु की रक्षक दृष्टि जीवन के संकट को बहुत कम कर देती है। बालारिष्ट उपस्थित होने पर भी गुरु की दृष्टि दैवी रक्षा प्रदान करती है। प्रतिकूल संयोगों के बावजूद जातक जीवित रहता है और फलता-फूलता है।

शक्ति	Strong
समूह	Longevity extended

अरिष्ट-भंग योग (केन्द्र में उच्च ग्रह)

श्रेणी	Longevity Extended
विवरण	केन्द्र में उच्च ग्रह: गुरु।
विवरण	केन्द्र भाव में स्थित उच्च ग्रह बालारिष्ट और अरिष्ट योगों को भंग करता है।
प्रभाव	केन्द्र में उच्च ग्रह की शक्ति जीवन के सभी संकटों पर विजय पाती है। जातक सुरक्षित और धन्य होता है। अन्य संकेतों के बावजूद लंबा स्वस्थ जीवन सुनिश्चित है।
शक्ति	Strong
समूह	Longevity extended

Raja Yoga (L4-L5 in Kendra/Trikona)

श्रेणी	Raja Yoga Extended
विवरण	चतुर्थेश=मंगल, पंचमेश=शुक्र केन्द्र/त्रिकोण में: हाँ।
विवरण	4थे और 5वें भाव के स्वामी दोनों केन्द्र या त्रिकोण में (BPHS अध्याय 41)।
प्रभाव	सुख, शिक्षा और बुद्धि का संयोग। संपत्ति और वाहन प्राप्त होते हैं। संतान सम्मान दिलाती है। विद्वत्तापूर्ण और सुखी जीवन।
शक्ति	Strong
समूह	Raj yoga extended

सर्वार्थ चिंतामणि राजयोग (केन्द्र में गुरु + L9)

श्रेणी	Raja Yoga Extended
विवरण	गुरु केन्द्र में: हाँ; नवमेश (बुध) केन्द्र या त्रिकोण में: हाँ।
विवरण	गुरु केन्द्र में, और 9वें भाव का स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में (सर्वार्थ चिंतामणि अध्याय 9)।
प्रभाव	ज्ञान और भाग्य का संयोग। गुरु का आशीर्वाद करियर की सफलता के रूप में प्रकट होता है। शिक्षक, सलाहकार, न्यायाधीश या धार्मिक अधिकारी। उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा।
शक्ति	Strong
समूह	Raj yoga extended

जैमिनी राज योग (AK+AmK केन्द्र/त्रिकोण में)

श्रेणी	Raja Yoga Extended
विवरण	आत्मकारक=बुध केन्द्र/त्रिकोण में: हाँ; अमात्यकारक=चन्द्र भी इसी प्रकार।
विवरण	आत्मकारक और अमात्यकारक दोनों केन्द्र या त्रिकोण में (जैमिनी पद्धति)।
प्रभाव	आत्मा और करियर के कारक दोनों बलवान। जैमिनी का सबसे शक्तिशाली राज योग। व्यक्ति सर्वोच्च भाग्य प्राप्त करता है। राजनीतिक या आध्यात्मिक नेतृत्व।
शक्ति	Strong
समूह	Raj yoga extended

Jaimini Raja Yoga (AK+AmK Conjunct)

श्रेणी	Raja Yoga Extended
विवरण	आत्मकारक=बुध की अमात्यकारक=चन्द्र से युति: हाँ।
विवरण	आत्मकारक और अमात्यकारक एक ही भाव में युत (जैमिनी)।
प्रभाव	आत्मा और व्यवसाय पूर्णतः एकरूप। व्यक्ति स्वाभाविक रूप से महानता प्राप्त करता है। दृढ़ एकाग्रता और संकल्प सर्वोच्च सफलता की ओर ले जाते हैं।
शक्ति	Strong
समूह	Raj yoga extended

Dhana Yoga (L9+L5 Conjunct)

श्रेणी	Dhana Extended
विवरण	नवमेश (बुध) और पंचमेश (शुक्र) की युति: हाँ।
विवरण	नवमेश और पंचमेश एक ही भाव में एक साथ।
प्रभाव	भाग्य और बुद्धि मिलकर धन देते हैं। सट्टा, संतान और पूर्व पुण्य कर्मों से लाभ। प्रायः युवावस्था के आरंभ से ही धनवान।
शक्ति	Strong
समूह	Dhana extended

Parakrama Yoga (Courage)

श्रेणी	Sibling Yogas
विवरण	तृतीयेश (गुरु) केन्द्र में स्वराशि/उच्च: हाँ।
विवरण	तृतीयेश स्वराशि/उच्च में होकर केन्द्र भाव में।
प्रभाव	असाधारण साहस, पराक्रम और उद्यम। व्यक्ति कार्य में निर्भीक होता है। पहल करता है, चुनौतियों का सीधा सामना करता है। व्यक्तिगत वीरता से उपलब्धियाँ।
शक्ति	Strong
समूह	Sibling yogas

सरस्वती योग (सर्वोच्च ज्ञान और कलाएँ)

श्रेणी	Knowledge & Skill Yogas
विवरण	गुरु शुभ भाव में: हाँ; शुक्र शुभ भाव में: हाँ; बुध शुभ भाव में: हाँ।
विवरण	गुरु, शुक्र, बुध तीनों केन्द्र, त्रिकोण या 2रे भाव में।

प्रभाव
असाधारण विद्या, वाक्पटुता, कलात्मक प्रतिभा और ज्ञान प्रदान करता है। व्यक्ति कला, विज्ञान और साहित्य में उत्कृष्टता प्राप्त करता है। बौद्धिक प्रतिभा के लिए पहचाना जाता है। ज्ञान से जुड़े सबसे शुभ योगों में से एक।

शक्ति	Strong
समूह	Knowledge skill yogas

ज्योतिषिक योग 1 (ज्योतिषीय प्रतिभा V1)

श्रेणी	Knowledge & Skill Yogas
विवरण	केन्द्र में गुरु: हाँ; केन्द्र में केतु: हाँ।
विवरण	गुरु और केतु दोनों केन्द्रों में — ज्योतिषीय और गूढ़ ज्ञान।
प्रभाव	ज्योतिष, भविष्यकथन और गूढ़ विद्याओं के प्रति स्वाभाविक योग्यता। केतु छिपे प्रतिरूपों की अंतर्ज्ञानपूर्ण समझ देता है; गुरु दार्शनिक ढाँचा देता है।
शक्ति	Strong
समूह	Knowledge skill yogas

काव्यालंकार योग (काव्य और साहित्यिक प्रतिभा)

श्रेणी	Knowledge & Skill Yogas
विवरण	1/5/9 भाव में शुक्र: हाँ; 1/5/9 भाव में बुध: हाँ।
विवरण	त्रिकोण भावों में शुक्र और बुध — काव्य और साहित्यिक उत्कृष्टता।

प्रभाव
काव्य, रचनात्मक लेखन या साहित्यिक कलाओं में असाधारण क्षमता। शुक्र अभिव्यक्ति का सौंदर्य देता है; बुध भाषाई कौशल देता है। प्रसिद्ध कवि, लेखक या साहित्यकार बन सकते हैं।

शक्ति	Strong
समूह	Knowledge skill yogas

Shabdhashastra Yoga (Linguistic Mastery)

श्रेणी	Knowledge & Skill Yogas
विवरण	बुध उच्च: हाँ; गुरु बली: हाँ।
विवरण	बुध उच्च, गुरु बलवान — भाषा और भाषाविज्ञान पर अधिकार।
प्रभाव	भाषा, व्याकरण और भाषाविज्ञान पर अधिकार। अनेक भाषाएँ सीखने की क्षमता। संवाद, शिक्षण और भाषा-विज्ञान में उत्कृष्टता।
शक्ति	Strong

समूह	Knowledge skill yogas

राज संबंध योग 2 (राजसी संबंध V2)

श्रेणी	Raja Sambandha Yogas
विवरण	नवमेश (बुध) और दशमेश (शुक्र) की युति: हाँ।
विवरण	9वें और 10वें भाव के स्वामियों की युति — धर्म से जुड़े राजसी संबंध (BPHS 42/2)।

प्रभाव
व्यक्ति का भाग्य और करियर शक्तिशाली संरक्षकों से गहराई से जुड़े होते हैं। सरकार, कुलीन वर्ग या उच्च-प्रतिष्ठा वाले संबंधों से सफलता। 9वें-10वें भाव के स्वामियों की युति अपने आप में भी एक शक्तिशाली राजयोग है।

शक्ति	Strong
समूह	Raja sambandha yogas

राज संबंध योग 3 (राजसी संबंध V3)

श्रेणी	Raja Sambandha Yogas
विवरण	केन्द्र/त्रिकोण में सूर्य: हाँ; केन्द्र/त्रिकोण में गुरु: हाँ।
विवरण	सूर्य और गुरु दोनों केन्द्र या त्रिकोण में — राजसी सम्मान और अधिकार (BPHS 42/3)।

प्रभाव
शक्तिशाली वर्गों से उच्च सम्मान, अधिकार और आदर। शुभ स्थिति में सूर्य और गुरु राजकृपा और सरकारी मान्यता देते हैं। व्यक्ति अभिजात सामाजिक वर्गों में उठता-बैठता है।

शक्ति	Strong
समूह	Raja sambandha yogas

Aputra Yoga

श्रेणी	Children Yoga
विवरण	पंचमेश (शुक्र) अशुभ स्थिति में: हाँ; पंचम में पाप ग्रहों का प्रभुत्व: हाँ।
विवरण	5वें भाव का स्वामी दुर्बल स्थिति में, 5वें भाव में पाप ग्रहों का प्रभुत्व और गुरु त्रिकोण में नहीं।
प्रभाव	पुत्र संतान का अभाव या संतानहीनता। संतान-सुख के बिना रहना पड़ता है। इसके स्थान पर आध्यात्मिक क्षतिपूर्ति मिल सकती है। उपायों की प्रबल सलाह।
शक्ति	चुनौतीपूर्ण
समूह	Children yogas

सावधानीपूर्ण

दरिद्र योग — 1ले/2रे भाव का स्वामी दुःस्थान में

श्रेणी	Daridra Yoga
विवरण	लग्नेश शनि भाव 12 में (दुःस्थान), द्वितीयेश शनि भाव 12 में (दुःस्थान)।
विवरण	1ले या 2रे भाव का स्वामी दुःस्थान (6,8,12) में — निर्धनता सूचक योग।
प्रभाव	आर्थिक संघर्ष, ऋण, धन संचय में कठिनाई। धन के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है।
शक्ति	चुनौतीपूर्ण
समूह	Daridra yogas

Lagna Lord in Dusthana

श्रेणी	Arishta Yoga
विवरण	लग्नेश शनि भाव 12 में (दुःस्थान)।
विवरण	लग्नेश 6ठे, 8वें या 12वें भाव में स्थित — स्वास्थ्य और जीवनशक्ति संबंधी चुनौतियाँ।
प्रभाव	स्वास्थ्य समस्याएँ, विदेश यात्रा या निवास, आध्यात्मिक खोज, गुप्त शत्रु।

शक्ति	चुनौतीपूर्ण
समूह	Arishta yogas

Graha Yuddha (Planetary War)

श्रेणी	Arishta Yoga
विवरण	ग्रह युद्ध के जोड़े: बुध बनाम शुक्र (1.00°)।
विवरण	एक-दूसरे से 1° के भीतर दो ग्रह (सूर्य/चन्द्र को छोड़कर) युद्ध करते हैं — पराजित ग्रह निर्बल होता है।
प्रभाव	पराजित ग्रह (कम शर या कम अंश वाला) अपनी दशा में कम फल देता है।
शक्ति	चुनौतीपूर्ण
समूह	Arishta yogas

राजभ्रष्ट योग (उच्च पद से पतन)

श्रेणी	Health & Disease Yoga
विवरण	दशमेश (शुक्र) नीच: हाँ; दशम में पाप ग्रह: सूर्य; लग्नेश निर्बल: हाँ।
विवरण	10वें भाव का स्वामी नीच का, 10वें भाव में पाप ग्रह और लग्नेश निर्बल।

प्रभाव
उच्च स्थिति या पद से पतन। भाग्य का अचानक पलटना। कभी प्रतिष्ठित रहा व्यक्ति शत्रुओं या परिस्थितियों के कारण पद खो देता है। निचले स्तर से पुनः निर्माण करना पड़ता है।

शक्ति	चुनौतीपूर्ण
समूह	Health disease yogas

Dhana Nashta Yoga

श्रेणी	Daridra Yoga — Extended
विवरण	भाव 2 का स्वामी (शनि) भाव 12 में (दुःस्थान ✓)।
विवरण	L2 6ठे/8वें/12वें भाव में (धनेश दुःस्थान में)
प्रभाव	धन और परिवार का स्वामी पीड़ित — आर्थिक हानि, ऋण, पारिवारिक कठिनाई।
शक्ति	चुनौतीपूर्ण
समूह	Daridra extended

Chandala Yoga (Guru-Chandala)

श्रेणी	Daridra Yoga — Extended
विवरण	गुरु की राहु से युति: नहीं; गुरु की केतु से युति: हाँ।
विवरण	गुरु की राहु या केतु से युति — गुरु-चांडाल योग।

प्रभाव
दूषित ज्ञान या बिगड़े गुरु-शिष्य संबंध। गलत गुरुओं का अनुसरण कर सकता है या झूठे ज्ञान से भ्रमित हो सकता है। सही निर्णय-क्षमता धुँधली हो जाती है। धर्म संबंधी भ्रम। गुरु के उपाय आवश्यक हैं।

शक्ति	चुनौतीपूर्ण
समूह	Daridra extended

योगज आयु 2 (प्रारंभिक बाल्यावस्था का जोखिम, आयु 4)

श्रेणी	Yogaristha Yogas
विवरण	लग्न में राहु: हाँ; पंचम भाव में मंगल: हाँ।
विवरण	राहु 1ले भाव में, मंगल 5वें भाव में — प्रारंभिक बाल्यावस्था में संकट का संकेतक।

प्रभाव
प्रारंभिक बाल्यावस्था में संकट का शास्त्रीय संकेतक (लगभग आयु 4)। प्रारंभिक वर्षों में सुरक्षात्मक उपाय आवश्यक। मंगल-राहु संयोग अंगारक-प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न करता है।

शक्ति	चुनौतीपूर्ण
समूह	Yogaristha yogas

Khalvata Yoga 3 (Baldness V3)

श्रेणी	Eye-Ear-Speech Doshas
विवरण	प्रथम भाव में राहु, कोई शुभ ग्रह नहीं: हाँ।
विवरण	लग्न में राहु बिना किसी शुभ ग्रह के — बालों सहित असामान्य शारीरिक विशेषताएँ।

प्रभाव
असामान्य शारीरिक विशेषताएँ, जिनमें बाल झड़ने की प्रवृत्ति भी शामिल है। शुभ ग्रह के शमनकारी प्रभाव के बिना लग्न में राहु विशिष्ट, असामान्य शारीरिक रूप-रंग दे सकता है।

शक्ति	मिश्रित
समूह	Eye ear speech yogas

वर्जित · प्रधान	0
वर्जित · सहायक	2
वर्जित · सावधानीपूर्ण	0

नोट
इस कुण्डली पर एक हज़ार से अधिक शास्त्रीय योगों का परीक्षण किया गया और 70 मेल खाए। यह संख्या भाग्य का माप नहीं है — अधिकांश कुण्डलियाँ कई सौ योगों से मेल खाती हैं, क्योंकि शास्त्रीय साहित्य लगभग हर ग्रह-स्थिति के लिए किसी योग का नाम देता है। आगे केवल वे योग दिए गए हैं जिनका महत्व है, सबसे प्रबल पहले।

सावधानी नोट
शास्त्रीय ग्रंथ प्रतिकूल योगों का उल्लेख उतनी ही सहजता से करते हैं जितना अनुकूल योगों का, और कोई कुण्डली लगभग हमेशा दोनों में से कुछ से मेल खाती है — यह कुण्डली दीर्घायु और अल्पायु दोनों के योगों से एक साथ मेल खाती है। इन्हें ऐसी प्रवृत्तियाँ मानें जिन्हें कुण्डली का शेष भाग या तो समर्थन देता है या निरस्त करता है, अपने-आप में कभी निर्णय नहीं। भंग (निरस्तीकरण) अपवाद नहीं बल्कि नियम है, और उसका मूल्यांकन ही ज्योतिषी का काम है।

आपका ब्रांड यहाँ

yourbrand.example · hello@yourbrand.example · +91 00000 00000

इस दस्तावेज़ के बारे में

यह रिपोर्ट प्रदर्शित जन्म विवरणों से गणना की गई एक ज्योतिषीय व्याख्या है। यह शास्त्रीय और आधुनिक विधियों द्वारा कुंडली से पढ़ी गई प्रवृत्तियों का वर्णन करती है; यह निश्चित घटनाओं की भविष्यवाणी नहीं है, और यह चिकित्सा, कानूनी, वित्तीय या मनोवैज्ञानिक सलाह नहीं है।

प्रकृति: शास्त्रीय पाठ-आधारित फलादेश: योग, ग्रह फल, रत्न और रुद्राक्ष संबंधी पाठ इस कुण्डली के लिए शास्त्रीय परंपरा से उद्धृत हैं। इनमें आयु, रोग या उपचार संबंधी कथन चिकित्सीय सलाह नहीं हैं और न ही आयु या स्वास्थ्य की भविष्यवाणी हैं।

96Astro API द्वारा गणना की गई · classical-kundli-report · जॉब sample